



ॐ
॥ ॐ गायत्री मंत्र ॥
॥ मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ ॐ गायत्री मंत्र ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

गायत्री मंत्र का शब्दार्थ

ॐ — परमब्रह्म, सृष्टि का मूल स्वरूप।
भूः — पृथ्वी लोक, प्राणस्वरूप।
भुवः — दुःखों का नाश करने वाला, अंतरिक्ष लोक।
स्वः — स्वर्ग लोक, आनंद एवं दिव्यता का प्रतीक।
तत् — वह परम दिव्य ईश्वर।
सवितुः — समस्त सृष्टि के सृजनकर्ता सूर्यस्वरूप परमात्मा।
वरेण्यम् — वरण करने योग्य, सर्वोत्तम।
भर्गः — पापों और अज्ञान का नाश करने वाला दिव्य तेज।
देवस्य — उस परम दिव्य ईश्वर का।
धीमहि — हम ध्यान करते हैं।
धियः — हमारी बुद्धियाँ।
यः — जो।
नः — हमारी।
प्रचोदयात् — प्रेरित करें, सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें।

गायत्री मंत्र का सरल हिंदी अर्थ

"हम उस परम पूजनीय, सर्वश्रेष्ठ, तेजस्वी, पापों का नाश करने वाले सृष्टिकर्ता परमात्मा के दिव्य प्रकाश का ध्यान करते हैं। वे परमेश्वर हमारी बुद्धि को सत्य, धर्म और सद्कर्म के मार्ग पर प्रेरित करें।"

भावार्थ

गायत्री मंत्र केवल सूर्य की उपासना का मंत्र नहीं, बल्कि समस्त ब्रह्मांड के परम चेतन, सर्वव्यापी परमात्मा का ध्यान है। यह मंत्र साधक के मन को शुद्ध करता है, बुद्धि को प्रकाशित करता है, विवेक को जागृत करता है और जीवन में सत्य, ज्ञान, शांति तथा आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

गायत्री मंत्र जप विधि

प्रातःकाल सूर्योदय के समय या सायंकाल सूर्यास्त के समय जप करना श्रेष्ठ माना जाता है।

पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें।

मन को शांत एवं एकाग्र रखें।

रुद्राक्ष या स्फटिक की माला से 108 बार जप करना शुभ माना जाता है।

जप से पहले और बाद में माता गायत्री का स्मरण एवं प्रार्थना करें।

ॐ श्री गायत्र्यै नमः।

ॐ तत्सत्।

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"